॥ ओ३म् ॥

माता रुद्राणां दुहितावसूनां अमृतस्यनाभिः ।

गौ चालीसा

लेखकः—श्री पं० जगन्नाथजी उपाध्याय
(संस्थापक—गौतम हाई स्कूल)
कड़क्का चौक, अजमेर

गौभक्त खूब छपवावें,

और खूब बटवावें ।

प्रकाशकः—

जीवन सुधार सभा

कड़क्का चोक, अजमेर

मुद्रक—कमल प्रेस, अजमेर ।

द्वितीय बार   सं० २०२३   मू० १५ पैसे
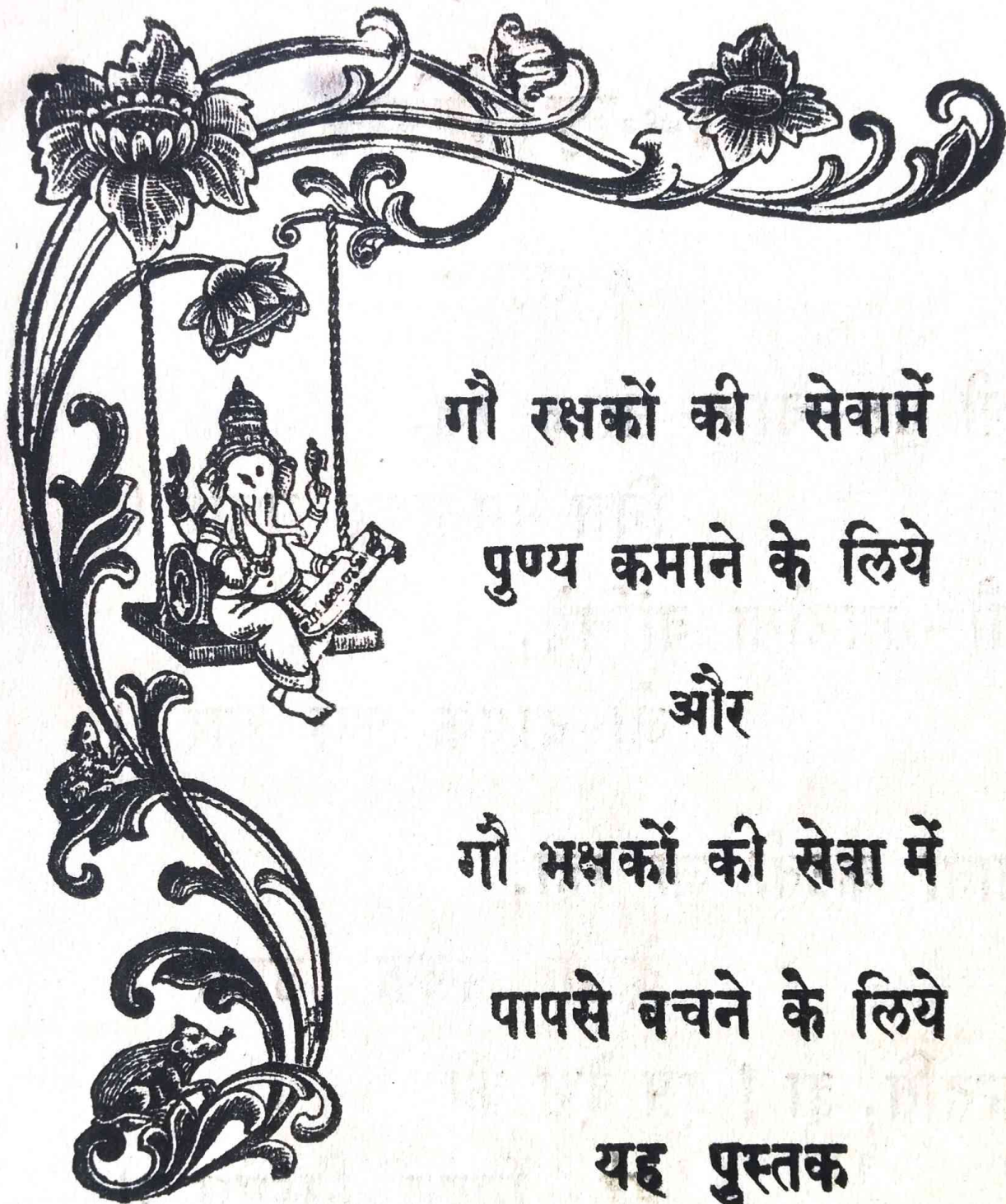
गौ रक्षकों की सेवामें

पुण्य कमाने के लिये

और

गौ भक्षकों की सेवा में

पापसे बचने के लिये

यह पुस्तक

सादर सप्रेम भेंट

आचार्य धर्मवीर आर्य

गौ-चालीसा

* दोहा *

श्री गुरु–चरण–सरोज–रज,
निज मन-मुकर सुधार ।
गौ - चालीसा बांचिये,
जो दायक फल चार ।।

माता कटती जा रही,
देखो पलक उघार ।
सन्तति, हा ! इस देश की
हुई निबल निस्सार ।।

—:●:—

*** चौपाई ***

पय समान औषधि नहीं होई ।
अजमाले चाहे नर कोई ॥
दूध जगत का जीवन-धन है ।
दूध बिना मानव निर्धन है ॥
दूध-पूत की खैर मनाते ।
दूध-काज सब मंगल गाते ॥
दूध बनादे कंचन काया ।
दूध बिना फीकी सब माया ।

दूध सात्विक बुद्धि कर दे ।
दूध दोष हर, सद्गुण भर दे ॥
दूध सिखावे सुख से रहना ।
दूध, दही, घी का क्या कहना ?
दूध बनादे निर्मल बानी ।
दूध रखे मानव का पानी ॥
दूध स्वार्थ के बनती नाहीं ।
दूध कपट की छनती नाहीं ॥
दूध प्राण का सार यही है ।
जन-जीवन आधार यही है ॥

* गिरधारीलाल आर्य *

दूध मिले दम-खम आजावे ।
मुर्दे भी ज़िन्दा बन जावें ॥
यदि हम दूधाधारी होते ।
रक्षा-कोष-हित खाते न गोते ॥
पीवें दूध, रोग भग जावें ।
वैद्य, डाक्टर निकट न आवें ॥
अस्पताल बन जायं अखाड़े ।
सदाचार के बजें नगाड़े ॥
मानव हों अतुलित बल-शाली ।
हो सबके चेहरों पर लाली ॥

भीष्म सरीखे हों ब्रह्मचारी ।
ऋषिवर दयानन्द से भारी ॥
किसका साहस आंख दिखावे ।
देश-धर्म पर आंच न आवे ॥
जहां गऊ-माता का पग फेरा ।
वहीं ऋद्धि-सिद्धि का डेरा ॥
कमला कदम कदम पर नाचे ।
विमला गौ की महिमा बांचे ॥
तरन-तारनी है गौ-माता ।
सुरपति शीश झुका सुख पाता ॥

हनुमत, अंगद रहे चरण में।
सकल देवता रहे शरण में॥
चाहे गङ्गा यमुना न्हालो।
चार धाम कर, मन बहलालो॥
गौ–सेवा बिन मुक्ति नाहीं।
राम–भक्त कह गये गुसांई॥
लाल, बाल व पाल कहां हैं?
दिलीप व गौपाल कहां हैं?
डूब गई सारी हिन्दुआनी।
नहीं गाय को चारा–पानी॥

गौ जीवन भर दूध पिलावे ।
हा ! वह नाहक मारी जावे ?
इससे बढ़ दुर्भाग्य और क्या ?
कृतघ्नता की बात और क्या ?
बार बार धिक्कार उन्हें है ।
गौ-माता से खार जिन्हें है ॥
राम-राज की रेखा खैंची ।
आज चल रही सब पर कैंची ॥
बेईमानी नस-नस में छाई ।
हा ! यह कैसी शिक्षा पाई ॥

शुद्ध-सरल-व्यवहार कहां है ?
प्रेम-भाव-सत्कार कहां है ?
आज अहिंसा रोती डोले ।
दया धर्म मुंह से नहीं बोले ॥
हुआ सभी बातों का तोड़ा ।
जब से धर्म कर्म को छोड़ा ॥
यदि विदेश से अन्न न आवे ।
तो फिर कैसे प्राण बचावें ॥
दाता से बन गये भिखारी ।
मिली धूल में इज्जत सारी ॥

गौ-माता की महिमा भारी ।
चर्चा करे स्वयं त्रिपुरारी ॥
जो तुम सुख से जीना चाहो ।
गौ-हत्या को बन्द कराओ ॥
नक़ली घी मत खाओ, खिलाओ ।
बची खुची गौ अब न कटाओ ॥
जीवो अपनी आन-बान से ।
गौ-रक्षा में जुटो जान से ॥
गौ सेवा में ध्यान लगाओ ।
निश्चय मन-वांछित फल पाओ ॥

गौ-रक्षा की रहे साधना ।
बापू की थी यही कामना ॥

॥ दोहा ॥

गौ चालीसा बांचकर,
जो ना करे विचार ।
"जगन" कहे धिक्कार है,
उस नर को सौ बार ॥

कामधेनु सुखदायिनी,
अन्न-धन का भण्डार ।
सुख-साधन सारे मिलें,
होवे जय-जयकार ॥

गणराज्य के विधाताओं से गौ की पुकार

—: गौ अष्टक :—

मैं ही कल्प-वृक्ष, कोई कामधेनु कहे मुझे,
मैं ही नन्दनी हूं, मेरे सारे साज-बाज हैं।
मेरे रोम रोम में, तैंतीस कोटि देव बसें,
स्वर्ग की सोपान, कहें पुण्य का जहाज है ॥
मैं ही हूं समर्थ, भार पृथ्वी का उठाने वाली
शक्ति का भण्डार, मेरी हस्ती पर नाज है ।
जगत के जीवों का जीवन हूं जगत माहीं,
गऊ होते मारी जाऊं, कैसा हा! स्वराज है ?

ऋषि, मुनि, ब्रह्मज्ञानी, हटी, योगी, तपी, ध्यानी,
राजा महाराजाओं के सारे सब काज हैं।
दिलीप की प्राण प्यारी, ग्वाल बने बनवारी,
चरणों में लौटते थे, राजन के राज हैं॥
मक्खन के भूखे, दूध चूखा लूम लूम थन,
शक्तिशाली हो के टूटे अरियों पै गाज हैं।
हृदय जान पाली, वृथा छोड़ी बनमाली क्यों ?
गऊ होते मारी जाऊं, कैसा हा ! स्वराज है ?

अहिंसा बिचारी आज फिरती है मारी मारी,
गांधी अवतारी ! देखो धर्म रहा भाज है।
कंठ पे कटारी, गांधीवादी खड़े देखें सारे,
बापू के पुजारी होते, खोई सारी लाज है।

हमें नहीं काटें, काटें विश्व का आधार जानो,
मरेंगे बेमौत, पापी, आते नहीं बाज हैं।
मैंने क्या बिगाड़ा, वह कौनसा अपराध किया,
गऊ होते मारी जाऊं कैसा हा ! स्वराज है ?

आर्य संस्कृति और अशोक चिन्ह दया का है,
प्राणी मात्र सुखी होवे, वही राम-राज है।
आज पशु-पक्षी, जीव, पेट के आहार बने,
इसी पाप से ही दाने-दाने के मोहताज हैं।
वेजीटेबल घृत खाय, शक्ति की आशा करें,
हार्ट फेल हो हो मरें, मर्ज ला-इलाज है।
'जगन' जीवन चाहो, प्राण माता के बचाओ
गऊ होते मारी जाऊं, कैसा हा ! स्वराज है ?

कृष्ण के गले का हार, दिलीप की प्राण-प्यारी,
ऋषि, मुनि, देव दानव, सारे ही तारे हैं ।
राजा, महाराजाओं की, मैं ही हूं प्राणाधार,
प्रजा भी पलती सभी, मेरे ही सहारे है ।
परशुराम, महावीर, भीष्म का बल थी मैं,
भारत की पूंजी पर चल रही कटारें हैं ।
लाला हरदेव गये, हर के भरोसे छोड़,
बची को बचाओ, आज गौ यही पुकारे है ।
स्वतन्त्र भारत में ही आजादी से छुरी चले,
गुरुजी आ देखो, छूटे खून के फव्वारे हैं ।
कोई तो बताओ, जय होगी किस बूते पर,
बच्चे बिन दूध पीये, सूखे ज्यों छुहारे हैं ।

कहाँ वह माल-ताल, सूख गई सारी खाल,
मिलें नहीं चने, गेहूं, मक्की, जौ, जुवारे हैं ।
जागो नौ-जवानो ! व किसानो प्यारे भारत के,
बची को बचाओ, आज गौ यही पुकारे है ॥

तैल का ही घृत बना, बेचे हैं बाजार बीच,
डिब्बों के दूध पर पले बच्चे बिचारे हैं ।
बनेंगे अशोक, शिवा, वीर ये प्रताप से क्या ?
अमर की कटारी, कहो कौन आज धारे है ?
भारत की लाज काज, लड़ेंगे खिलौने कैसे ?
आंखों में जीव, जिन्हें दिनमें दिखें तारे है ।
ऐसी हा ! अवस्था में कब तक अचेत रहें,
बची को बचाओ, आज गौ यही पुकारे है ॥

भारत में वेजीटेबुल घी का व्यापार खोल,
'गऊ-माता' बोल, घाट मौत के उतारे हैं।
कारखाने नहीं, ये तो मारखाने जानो इन्हें,
असली को मिटाने वाले असली हत्यारे हैं।
हिन्द सरकार हिंसा रोक के, बचावे शक्ति,
'जगन' तभी जानें अहिंसा-व्रत धारे हैं।
ब्रह्मचारी प्रभुदत्त ! तुम सा कौन गौ-भक्त,
बची को बचाओ, आज गौ यही पुकारे है॥
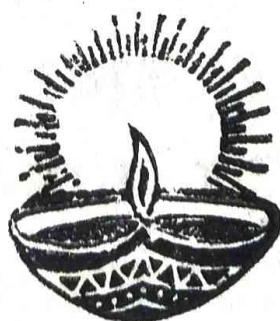
—: निवेदन :—

प्यारे भाइयो ! जब से यह गौ-सेवा करना भार
, तभी से गुड़ मिलो या गोबर, आज की दुनिया
उसे ही खाने को तैयार है। याद रहे:—

मक्खन उतारा दूध, घी मिले वेजीटेबल,
हीर जला खायँ, पवन चक्की का आटा है।
पीवें नलपानी अरु शर्बत ऐसेन्स का ही,
प्रातः ही बिस्कुट चाय, जीवन का कांटा है॥
रीझें लवण्डर पर, हीको पर टूट पड़ें,
घासलेटी तेल ने दिमाग़ खूब चाटा है।
'जगन' यदि स्वदेशी रहन सहन होता,
तो, न कोई कहता-आज बुद्धि का घाटा है॥
हो कूएका निर्मल जल, आटा हाथ चक्की का,
खाये सुख होते देख, काया कांपे क्रूर की।
दो कदम जाय, दूध सामने दुहाय पीवे,
असली घृत खावे तो सूझे बड़ी दूर की॥

शर्बत फल-फूलों का, वनस्पतिक तेल हो,
देशी का गुमान मस्ती देशी के शरूर की।
फैशन के पुजारी, जो नेशन के दास बनें,
"जगन" फिर बहार देखो भारतीय नूर की॥

समय रहते, संभल जाना ही समय की बात है।
चार दिन की चाँदनी है, फिर अंधेरी रात है।

याद रहे कि यदि आज हमारी प्राचीन-संस्कृति का बोल-बाला होता तो जीना है तो अँडे मुर्गी खावो और अन्न को बचावो की बजाय, हमें यह सुनने को मिलता कि प्राणी मात्र की रक्षा करो और जीवो और जीनेदो का सिद्धांत चरितार्थ करो तब यही मानवता की निशानी होती और सफल ज़िन्दगानी होती, न कोई मंहगाई का भार होता और न कोई बेकारी से बेकार होता, न कहीं फिर भ्रष्टाचार होता और न सर्वनाशी रिशवत का गरमा गरम बाजार होता, बल्कि शुद्ध आचार विचार होता।

हे राम के प्यारो !

अपने भरोसे ही यह जीवन है इसको भूल।

कण कीड़ी, मण कुंजरा, अनल पंख गज पांच।
मोती देत मराल को, रख प्रभुवर में सांच ॥

अर्थात् 'उसी कर्ता-धर्ता-विधाता की कृपा से ही सब का जीवन चलता है, जानकर ही, गौ की सेवा-सतकार में लगो। इसी पर लगभग चार सौ वर्ष पूर्व, राजा बीरबल 'ब्रह्म कवि' ने कहा था कि-

जब दांत न थे, तब दूध, दियो,
जब दूध दियो, कह अन्न न दै है।
जो जल में थल में, पशु पक्षिन को।
सुधि लै है सो तेरो भी लै है ॥
जान को देत, अजान को देत,
जहान को देत, सो तौ कोभी दै है ॥

काहे को सोच करे मन-मूरख,
सोच करे कछु हाथ न ऐ है ॥
यद्यपि द्रव्य को सोच करे,
पर गर्भ में के ते गांठ को खायो ।
जा दिन जन्म लियो जग में,
तब केतिक कोटि लिये संग आयो ॥
वा को भरोसो न छांड़ अरे मन,
जा सो अहार अचेत में पायो
"ब्रह्म" कहे सुन शाह अकब्बर,
देख मेरो मन यों हुलसायो ।
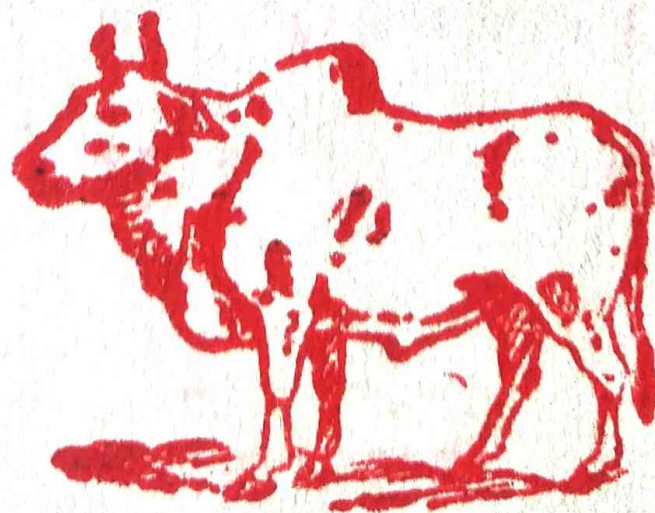
पुण्य कमावो ॐ आनन्द मनावो

प्यारे पाठक !

गौ-शाला जा देख नहीं है चारा पानी ।
तू जोगा कहलाय धूल तेरी ज़िन्दगानी ।।
गौवें गर मिटगईं तो तू भी मिट जावेगा ।
कटे पतंग की तरह न जाने कहां जावेगा ।।
यही जान तन-मन-धन से करले गौ-सेवा ।
बरसे मूसलधार मिले फिर मिश्री मेवा ।।

शुभ चिन्तक—

जगन्नाथ उपाध्याय, अजमेर